No. of Printed Pages : 4

MSK–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.एस.के.-003 : दर्शन : न्याय, वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में दिए गए निर्देशानुसार ही उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. भारतीय दर्शन के प्रधान लक्ष्य का विवेचन कीजिए। 10

अथवा

आस्तिक दर्शनों का परस्पर सम्बन्ध बताते हुए विस्तृत परिचय दीजिए।

2. न्याय–वैशेषिक दर्शन का परिचय दीजिए। 10

अथवा

बौद्ध दर्शन की **चार** शाखाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. चार्वाक दर्शन के भौतिकवाद की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए। 10

अथवा

जैन दर्शन के द्रव्य सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : $4 \times 10 = 40$

(क) अभावश्चतुर्विधः प्रागभावः प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ताभावोऽन्योन्याभावश्चेति।

अथवा

ज्ञानाधिकरणमात्मा। स द्विविधः जीवात्मा परमात्मा चेति। तत्रेश्वरः सर्वज्ञः परमात्मा एक एव। जीवस्तु प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च।

(ख) असाधारणं कारणं करणम्। कार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम्। कार्यं प्रागभावप्रतियोगि।

अथवा

आप्तवाक्यं शब्दः। आप्तस्तु यथार्थवक्ता। वाक्यं पदसमूहः।

(ग) प्रशान्तचित्ताय जितेन्द्रियाय प्रहीणदोषाय यथोक्तकारिणे। गुणान्वितायानुगताय सर्वदा प्रदेयमेतत् सततं मुमुक्षवे इति।।

अथवा

असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवत् वस्तुनि अवस्त्वारोपः अध्यारोपः।

(घ) दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ। दृष्टे सापार्था चेन्नैकान्तात्यन्तोभावात्।।

अथवा

सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययाधिष्ठानात्। पुरुषोऽस्ति भेक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृतेश्च।।

खण्ड—ग

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$5 \times 6 = 30$

(क) इन्द्रियसन्निकर्ष

(ख) अर्थापत्ति

(ग) मूलप्रकृति

(घ) पुरुषबहुत्व

(ङ) समवायिकारण

(च) उपमान

(छ) विपर्यय

× × × × ×